संघर्ष के आगे जीत हवै

संजो प्रधान

संजो देवी चित्रकूट के मानिकपुर ब्लाक मा गिदुरहा ग्राम पंचायत के प्रधान हवैं। जबै हम संजो देवी से मिलै गयेंन तबै वा अपने घर मा नहीं रहै। दस मिनट के बाद संजो कुर्ता पैजामा पहने, मूड़े मा साफी बांधे मोटर साइकिल चलावत चली आवत रहै, हम देख के दंग रहि गयेन। संजो बताइस कि वा बैंक मा वृद्धा पेंशन योजना के खाता मा पइसा चढ़वावै गे रहै। वहिके हाथ मा बैंक के पन्द्रह बीस पास बुक रही हवैं। तबहिने हम गांव के एक मेहरिया के विधवा पेंशन के बारे मा बात करेन तबै संजो बताइस–''विपक्षी मड़ई गांव वालेन का मोरे खिलाफ करै चाहत हवैं। यहै से वा मेहरिया आपन पास बुक मोहिका नहीं देत आय। वहिका डेर हवै कत्तौ मैं रुपिया निकाल न लेव।

पंचायती राज संस्थानन मा कइयौ दरकी मेहरिया उम्मीदवार के रूप मा मेहरिया के भूमिका मा बहुतै सवाल उठाये जात हवैं। जइसे कि इं मेहरिया का काम करिहैं, इं तौ पढ़ी लिखी नहीं आहीं? इं सवालन के कारन ज्यादातर मेहरियन का कमजोर दिखाये के कोशिश करत हवैं पै कइयौ मेहरिया इनतान के हवैं जउन इं चुनौतिन का तोड़ के पंचायत के कामन का पूर करती हवैं। यहिनतान के कुछ मेहरियन मा एक हवै संजो देवी जेहिका 24 अप्रैल 2010 का सशक्त महिला प्रतिनिधि के रूप मा सम्मानित कीन गा हवै। सशक्त महिला का मतलब हवै कि हिम्मती मेहरिया जउन बिना पढ़े लिखे भी पंचायत के कामन का नीक तान से करवावत हवै। या इलाका मा कोल जाति अउर आदिवासी जाति के मड़ई रहत हवैं। हिंया के जनसंख्या लगभग बाइस सौ हवै।

एक आदिवासी मेहरिया का प्रधान होब बहुतै बड़ी बात हवै, जउन कुंआ, तालाब, बिजली अउर हैण्डपम्प के समस्या का दूर करै का प्रयास करत हवै। गांव के मेहरियन का कहब हवै कि प्रधान हमार समस्या का खतम करै के पूर कोशिश करत हवै। जबै हम वहिसे इनाम के बारे मा पूछा कि वहिका इनाम पा के कसत लागत हवै तबै वा कहिस कि इनाम पावै के बाद केहिका खुशी नहीं होत आय, मोहिका भी बहुतै खुशी हवै। संजो का कहब हवै–''ज्यादातर हमरे देश मा मेहरिया मनसवन के सहारे रहती हवैं। हमेशा मेहरिया प्रधान होय के बादौ भी वहिके पद का इस्तेमाल मनसवा या जेठ करत हवैं, पै मैं प्रधान का काम खुदै करे हौं अउर मोरे पास मोर मोहर, जरूरी कागज रहत हवैं, मैं आपन खुदै दस्खत करती हौं।

संजो मेहरियन के लाने एक मिशाल हवै। साइकिल से लइके ट्रैक्टर तक चलावे वाली संजो आज बेखौफ होइके डाकुन का सामना करत हवै। संजो के जीवन का संघर्ष का देखके कउनौ भी मेहरिया जिये के लाने खुदै संघर्ष कइ सकत हवैं।

आपन काम के बारे मा संजो बताइस–''मैं अपने कार्यकाल मा अस्सी मड़इन के जमीन के पटटा, छप्पन आवास, दुइ सौ इक्सठ शौचालय, एक सौ पचास पेंशन देवाये हौं। यहिके अलावा खुदै गरीबन के मदद भी करती हौं।

वहिसे पूछा कि मनसवन जइसे पहनावा अउर बाल राखै का कारन हवै। संजो जोर से हंस के बोली–''महिला समाख्या मा आवै के बाद मैं कुर्ता पैजामा पहने लागी हौं। यहिसे मोटर साइकिल चलाने में आसानी होती हवै। अउर रही बाल काटे के बात, जब एक मड़ई कहिस कि कि बाल पकड़ कर मारी जइहै, तबै मैं वहै दिन जाके आपन बाल कटवा लीनै हौं, जेहिसे अब मोर बाल कउनौ के हाथ मा नहीं आवत आहीं। ''अगले साल चुनाव तो मैं लड़िहौं जीतै या हारौं? जब तक मोहिमा ताकत हवै, मैं पीड़ित अउर असहाय मड़इन के सेवा करिहौं।''